CLASS 12 • HISTORY • HINDI MEDIUM

ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ - हड़प्पा सभ्यता

भाग I • अध्याय I

संस्कृति शब्द का अर्थ

पुरातत्वविद संस्कृति शब्द का प्रयोग पुरावस्तुओं के ऐसे समूह के लिए करते हैं, जिनकी शैली विशिष्ट होती है। ये वस्तुएँ सामान्यतः एक साथ किसी विशेष कालखंड और भौगोलिक क्षेत्र से संबद्ध पाई जाती हैं।

हड़प्पा सभ्यता / सिंधु घाटी सभ्यता

- प्राचीन भारत की पहली सभ्यता हड़प्पा सभ्यता है। यह संस्कृति पहली बार हड़प्पा नामक स्थान पर खोजी गई थी, इसलिए उसी के नाम पर इस संस्कृति का नाम रखा गया। हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में मोंटगोमरी जिले की रावी नदी के बाएँ तट पर स्थित है। इसका काल लगभग 2600 से 1900 ईसा पूर्व के बीच निर्धारित किया गया है। इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है।
- इस सभ्यता का विस्तार प्रारंभ में 12 लाख 99 हजार 600 वर्ग किलोमीटर निर्धारित किया गया था। अब इसका संभावित विस्तार लगभग 15-20 लाख वर्ग किलोमीटर माना जाता है। इसके लिए सिंधु-सरस्वती संस्कृति नाम भी सुझाया गया है। इस सभ्यता का उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता है।
- महादेवन और विश्वनाथ के शोध के आधार पर सिंधु सभ्यता के 2467 अभिलेख / अभिलिखित साक्ष्य मिले हैं। इनकी संख्या अब लगभग 3000 हो गई है।

हड़प्पा संस्कृति का काल / सिंधु घाटी सभ्यता

2600 से 1900 ईसा पूर्व

हड़प्पा संस्कृति के भाग / चरण :

- आरंभिक हड़प्पा संस्कृति।

- विकसित हड़प्पा संस्कृति।
- परवर्ती हड़प्पा संस्कृति।
- B.C. (Before Christ) - ईसा पूर्व।
- A.D. (Anno Domini) - ईसा मसीह के जन्म वर्ष से गिनी जाने वाली कालगणना।
- B.P. (Before Present) - वर्तमान से पहले।

हड़प्पा सभ्यता की खोज

नोट: हड़प्पा सभ्यता की खोज 1921-22 में दयाराम साहनी, रखालदास बनर्जी और सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में हुई।

- 1856 में कराची और लाहौर के बीच पहली बार रेलवे लाइन का निर्माण हो रहा था। उत्खनन के दौरान अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला। यह स्थान वर्तमान में पाकिस्तान में है। कर्मचारियों ने इसे खंडहर समझकर यहाँ की हजारों ईंटें उखाड़ लीं और उन्हें ले गए। इन ईंटों का इस्तेमाल रेलवे लाइन बिछाने में किया गया, लेकिन वे यह नहीं पहचान सके कि यहाँ कोई प्राचीन सभ्यता थी।
- उस समय जॉन ब्रंटन और विलियम ब्रंटन ने वहाँ एक महत्वपूर्ण सभ्यता होने का संकेत दिया, लेकिन फिर भी कोई उत्खनन नहीं किया गया।
- 1920-21 में माधोस्वरूप वत्स और दयाराम साहनी द्वारा पहली बार हड़प्पा का उत्खनन किया गया।
- 1922 में रखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो नामक स्थान का उत्खनन किया। यह पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएँ तट पर स्थित है। वे इस टीले के ऊपर स्थित कुषाण युगीन बौद्ध स्तूप का उत्खनन कर रहे थे।

नोट: मोहनजोदड़ो के शाब्दिक अर्थ के रूप में ये नाम दिए गए हैं: (i) मृतकों का टीला, (ii) मुर्दों का टीला, (iii) प्रेतों का टीला, (iv) सिंध का बाग, (v) सिंध का नखलिस्तान।

इन दोनों उत्खननों के बाद सन 1924 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल सर जॉन मार्शल ने विश्व के सामने एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की। उन्होंने लंदन वीकली नामक पत्रिका में इसे सिंधु सभ्यता नाम दिया।

हड़प्पा सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता क्यों कहा जाता है ?

इसे सिंधु घाटी सभ्यता कहा जाता है, क्योंकि यह सिंधु नदी की घाटी के आसपास फैली थी। यह क्षेत्र उपजाऊ था और हड़प्पावासी यहाँ खेती करते थे।

सिंधु सभ्यता की लिपि

- सिंधु लिपि को पढ़ने का प्रथम प्रयास 1925 में वेंडेल ने किया। बाद में नटवर झा, धनपत सिंह धान्या और राजाराम ने भी प्रयास किए। लेकिन अभी तक सिंधु लिपि को प्रमाणित रूप से पढ़ा नहीं जा सका है।
- लिपि के सबसे अधिक अक्षर मोहनजोदड़ो से और दूसरे स्थान पर हड़प्पा से मिले हैं। सबसे बड़े अक्षर धोलावीरा से मिले हैं, जिन्हें सूचना-पट्ट (Notice Board) का प्रतीक माना गया है।
- सिंधु लिपि भावचित्रात्मक है, अर्थात चित्रों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति होती है। यह दोनों दिशाओं में लिखी जाती थी, इसलिए इसे बुस्ट्रोफेदॉन कहा गया है।
- सभ्यता के विभिन्न पक्षों को समझने में सेलखड़ी और पक्की मिट्टी से बनी मुहरें महत्वपूर्ण हैं। ये विभिन्न आकार और प्रकार की हैं। इनमें आयताकार और वर्गाकार मुहरें प्रमुख हैं।
- आयताकार मुहरों पर केवल लेख मिलते हैं, जबकि वर्गाकार मुहरों पर लेख और चित्र दोनों मिलते हैं। मेसोपोटामिया की S बेलनाकार मुहरें मोहनजोदड़ो से और फारस की बनी संगमरमर की मुहरें लोथल से मिली हैं।

सिंधु सभ्यता के निर्माता

सिंधु सभ्यता के उत्खनन में मुख्यतः चार प्रकार के अस्थि-पंजर मिले हैं।

- प्रोटो- आस्ट्रोलॉयड।
- भूमध्य सागरीय।
- अल्पाइन।
- मंगोलियन।

इसके आधार पर यह संभावना स्वीकार की गई कि सभ्यता के निर्माण में मिश्रित प्रजातियों के लोगों का योगदान था। इसके संस्थापकों के रूप में द्रविड़ों को माना गया है, जो बाद में दक्षिण भारत की ओर चले गए।

सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषता

कांस्य युगीन सभ्यता थी।

- भारतीय इतिहास में प्रथम नगरीय क्रांति का प्रतीक। इसकी पुष्टि उत्खनन से प्राप्त महत्वपूर्ण नगरों के अवशेषों से होती है।
- व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थान था।
- जीवन के प्रति शांतिवादी दृष्टिकोण। उत्खनन में हथियार तथा ढाल और कवच जैसे रक्षात्मक उपकरण नहीं मिले।
- जीवन के प्रति समष्टिवादी दृष्टिकोण। इसकी पुष्टि मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार, धोलावीरा और ज़ूनिकरण से प्राप्त स्टेडियम तथा ज़ूनिकरण और मोहनजोदड़ो के सभा-भवनों से होती है।
- सिंधुवासी लोहे से परिचित नहीं थे। लोहे का प्राचीनतम साक्ष्य उत्तर प्रदेश के एटा जिले के अतरंजीखेड़ा से मिला है। इसका समय लगभग 1050 ईसा पूर्व स्वीकार किया गया है।
- सिंधुवासी लोग पीतल से भी परिचित नहीं थे।

हड़प्पा सभ्यता की जानकारी के प्रमुख स्रोत

- आवास।
- मृद्भांड।
- आभूषण।
- औजार और।
- मुहरें।
- इमारतें और खुदाई से मिले सिक्के।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल

- हड़प्पा सभ्यता के कुछ स्थल वर्तमान में पाकिस्तान में और शेष भारत में हैं।
- नागेश्वर (गुजरात)।
- बालाकोट (पाकिस्तान)।
- चन्हुदड़ो (पाकिस्तान)।
- कोटदीजी (पाकिस्तान)।

THEBOARDSTUDY.COM

- धोलावीरा (गुजरात)।
- लोथल (गुजरात)।
- कालीबंगन (राजस्थान)।
- बनावली (हरियाणा)।
- राखीगढ़ी (हरियाणा)।

हड़प्पा सभ्यता में नगर नियोजन तथा वास्तुकला

- नगर योजना।
- भवन निर्माण।
- सार्वजनिक भवन।
- विशाल स्नानघर।
- अन्न भंडार।
- जल निकास प्रणाली।

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना (बस्तियाँ)

बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थीं।

- **दुर्ग:** कच्ची ईंटों के चबूतरों पर बने दुर्ग दीवारों से घिरे थे। इन पर बनी संरचनाओं का उपयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक कार्यों के लिए होता था।
- **निचला शहर:** यहाँ आवासीय भवनों के उदाहरण मिलते हैं। निचला शहर भी दीवार से घिरा था। कई भवन ऊँचे चबूतरों पर बनाए गए थे, जो नींव का काम करते थे।

हड़प्पा सभ्यता की सडकों और गलियों की विशेषताएँ

- सीधी सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। इससे पूरा नगर क्षेत्र विभिन्न आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। इसे जाल पद्धति, ऑक्सफोर्ड पद्धति या चेस बोर्ड पद्धति कहते हैं।
- सड़कों का निर्माण मिट्टी से किया जाता था।
- **नोट:** बनावली में सड़कों पर गाड़ी के पहियों के निशान मिले हैं। कालीबंगा में सड़क पक्की करने के प्रयासों के साक्ष्य भी मिले हैं।

THEBOARDSTUDY.COM

- सड़कों के किनारे पानी की निकासी के लिए नालियाँ थीं। इन्हें फर्श से ढकने की व्यवस्था थी। थोड़ी दूरी पर शोषक कूप बने थे, जिनमें गंदगी रुकती थी। पक्की ईंटों का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में होता था।

हड़प्पा सभ्यता में भवन निर्माण

- मकानों की योजना आँगन पर आधारित थी। इनमें शौचालय, स्नानागार, रसोईघर और शयनकक्ष के अतिरिक्त अन्य कमरे भी मिले हैं।
- मजबूती के लिए नींव का निर्माण किया जाता था। सड़कों के किनारे मकान बने थे। हवा, सफाई और प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था थी।
- मकान जमीन से ऊँचाई पर बनाए जाते थे। उनके दरवाजे सड़कों की ओर खुलते थे। मुख्य प्रवेश-द्वार प्रायः मुख्य मार्ग की अपेक्षा गली की ओर था। इससे मकान बाहरी हलचल, शोरगुल और प्रदूषण से सुरक्षित रहते थे।
- सड़कों के किनारे पानी की निकासी के लिए नालियाँ बनी थीं। इन्हें ढकने की व्यवस्था भी थी।
- नालियों को फर्श से ढका जाता था। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर शोषक कूप थे, जिनमें गंदगी रुकती थी। पक्की ईंटों का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में होता था।

हड़प्पा सभ्यता में सार्वजनिक भवन

- सिंधु घाटी की बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थीं। ऊपरी हिस्से में सार्वजनिक भवन और निचले हिस्से में व्यक्तिगत आवास थे।
- उत्खनन में सार्वजनिक या राजकीय भवनों के अवशेष मिले हैं। मोहनजोदड़ो में एक अवशेष 70 मीटर लंबा और 24 मीटर चौड़ा है। यह उस काल की संपन्नता का परिचायक है। वहीं 7। मीटर लंबा और उतना ही चौड़ा एक वर्गाकार कक्ष मिला है, जिसमें 20 स्तंभ हैं।
- अनुमान है कि इस भवन का उपयोग आपसी विचार-विमर्श, धार्मिक आयोजन और सामाजिक कार्यक्रमों के लिए होता था।

हड़प्पा सभ्यता में विशाल स्नानागार

- स्नानागार का जलाशय किले में था। यह ।।.४४ मीटर लंबा, 7.0। मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा था। इसके तल तक पहुँचने के लिए पक्की ईंटों की सीढ़ियाँ

बनी थीं।

- स्नान-कुंड के चारों ओर कमरे और बरामदे थे। पास में एक कुआँ था, जिससे कुंड में पानी आता था। गंदे पानी की निकासी एक अन्य द्वार से होती थी। फिर बड़ी नालियों के माध्यम से पानी शहर से बाहर निकल जाता था।
- स्नानागार की दीवारों में सीलन से बचाव के लिए डामर या तारकोल लगाया जाता था। पूरे स्नानागार में 6 प्रवेश-द्वार थे। गर्म पानी की व्यवस्था भी थी।
- **नोटः** अर्नेस्ट मैके के अनुसार, यह स्नानागार पुरोहितों के स्नान के लिए प्रयुक्त होता था।

अन्न भंडार

हड़प्पा के किले के राजमार्ग में 6-6 पंक्तियों वाले अन्न भंडार मिले हैं। इनकी लंबाई 18 मीटर और चौड़ाई 7 मीटर (18 × 7) थी। मुख्य द्वार नदी की ओर खुलता था, क्योंकि जलमार्ग से आने वाला सामान यहाँ एकत्र किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता में जल निकास प्रणाली

हड़प्पा संस्कृति नगरीय थी और लोगों का जीवन स्तर ऊँचा था। घरों का गंदा पानी सड़कों के किनारे बनी नालियों से शहर के बाहर जाता था। नालियाँ पक्की ईंटों की थीं। उन्हें नुकसान से बचाने के लिए चूना, मिट्टी और जिप्सम से प्लास्टर किया जाता था।

- **नोटः** प्रोफेसर रामचरण शर्मा के अनुसार, कांस्य युग की किसी अन्य सभ्यता ने सफाई और स्वास्थ्य को इतना महत्व नहीं दिया, जितना हड़प्पा के निवासियों ने दिया।
- **नोटः** पक्की ईंटों का बहुत अधिक प्रयोग होता था। मुख्यतः चार प्रकार की ईंटें थीं। आयताकार ईंटों का अनुपात 4 : 2 : 1 था।
- **L प्रकार की ईंटें:** इनका प्रयोग कोनों में होता था।
- **नोकदार ईंटें:** इनका प्रयोग कुओं में होता था।
- **T प्रकार की ईंटें:** इनका प्रयोग सीढ़ियों में होता था।
- अलंकृत ईंटों से बना फर्श कालीबंगा से मिला है।
- ईंटों पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पंजों के निशान चन्हुदड़ो से मिले हैं। ।

हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक जीवन

- सामाजिक संगठन।
- भोजन।
- वस्त्र।
- आभूषण व सौंदर्य प्रसाधन।
- मनोरंजन।
- प्रौद्योगिकी।
- मृतक कर्म।
- चिकित्सा विज्ञान।

हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक संगठन

- इतिहासकार गॉर्डन चाइल्ड ने समाज को चार वर्गों में विभाजित किया है।
- **शिक्षित वर्गः** पुरोहित, चिकित्सक, जादूगर और ज्योतिषी।
- **योद्धा / सैनिकः** दुर्गों की उपस्थिति से इनके होने का संकेत मिलता है।
- **व्यापारी व दस्तकारः** बुनकर, कुम्हार और सुवर्णकार।
- **श्रमिक एवं कृषकः** टोकरी बनाने वाले और मछली पकड़ने वाले।

हड़प्पा सभ्यता में भोजन

- लोग गेहूँ, चावल, जौ, तिल, मटर और सब्जियाँ खाते थे। वे मांसाहारी भी थे और कछुआ, घड़ियाल, भेड़, बकरी, सुअर तथा मछली का मांस खाते थे।
- खजूर, अनार, तरबूज, नींबू और नारियल जैसे फलों के चित्र मिलते हैं। इन फलों का उपयोग भोजन में किया जाता था।
- इस प्रकार हड़प्पावासी मांसाहारी व शाकाहारी दोनों ही थे।

हड़प्पा सभ्यता में वस्त्र

- अलग-अलग ऋतुओं में अलग-अलग वस्त्र पहने जाते थे। महिलाओं और पुरुषों के वस्त्रों में भिन्नता थी।
- पुरुष धोती, पगड़ी और दुशाला (कुर्ता) पहनते थे। महिलाएँ घाघरा और साड़ी

THEBOARDSTUDY.COM

पहनती थीं।

- **नोट :** - चन्हुदड़ो से प्राप्त मूर्ति में पगड़ी मिली है।

हड़प्पा सभ्यता में आभूषण एवं सौंदर्य प्रसाधन

स्त्री और पुरुष दोनों आभूषण पहनते थे तथा सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करते थे। अंगूठी, कान की बाली, चूड़ियाँ, बाजूबंद और हार प्रचलित थे। धनी लोग सोने जैसी कीमती धातुओं के आभूषण पहनते थे। सामान्य लोग ताँबे, कांसे और हड्डी के बने आभूषण पहनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में मनोरंजन

- मछली पकड़ना और शिकार करना प्रिय मनोरंजन थे। जानवरों की दौड़, झुनझुने, सीटियाँ और शतरंज जैसे खेल मनोरंजन के साधन थे।
- पत्थर और सीप की गोलियों से भी खेल खेले जाते थे। खुदाई में पशुओं की मूर्तियाँ, बैलगाड़ियाँ और दो पहियों वाला ताँबे का रथ मिला है। नृत्यांगना की मूर्ति से नृत्य और संगीत के प्रति रुचि का पता चलता है।

प्रौद्योगिकी

लोग धातुकर्म करते थे। वे अयस्कों से धातु अलग करते और मिश्रधातु बनाते थे। ताँबे में चाँदी व टिन मिलाने का उल्लेख मिलता है। अयस्क राजस्थान के खेतड़ी (झुनझुनू) तथा बिहार के हजारीबाग से प्राप्त होते थे। चकमक पत्थर के बाट और नालिकाकार बर्तन भी बनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में मृतक कर्म (अंत्येष्टि क्रिया)

- मोहनजोदड़ो, बनावली, हड़प्पा और कालीबंगा जैसे नगरों में अंत्येष्टि स्थलों के अवशेष मिले हैं।
- सर जॉन मार्शल ने अंत्येष्टि की विधियों को तीन भागों में विभाजित किया है।
- पूर्ण समाधिकरण / शवाधान।
- आंशिक समाधिकरण / शवाधान।
- दाह कर्म / कलश शवाधान।

पूर्ण शवाधान

- शव को उत्तर से लेकर दक्षिण की ओर दफनाया जाता था।
- **नोटः** हड़प्पा में एक कब्र ऐसी मिली है, जिसमें शव दक्षिण से उत्तर दिशा में दफनाया गया और ताबूत में रखा गया। इसकी पहचान विशेष कब्र के रूप में की गई है।
- **नोटः** लोथल में पूर्व से पश्चिम दिशा में दफनाने के अवशेष मिले हैं। शव करवट की स्थिति में था।
- **नोटः** लोथल से स्त्री और पुरुष का युग्म शव मिला है। मूल notes में इसके आधार पर सती प्रथा के प्रचलन का अनुमान लगाया गया है।
- सबसे बड़ा कब्रिस्तान हड़प्पा से मिला है, जिसे R37 कहा गया है।
- हड़प्पा संस्कृति में एक अन्य कब्रिस्तान भी मिला है, जिसे H कब्रिस्तान कहा गया है।

आंशिक शवाधान

पशु-पक्षियों द्वारा शव खाए जाने के बाद बचे अवशेषों को दफना देना।

कलश शवाधान / दाह कर्म

दाह-संस्कार के बाद बचे अवशेषों को कलश या मंजूषा (बर्तन) में रखकर दफना देना।

हड़प्पा सभ्यता में चिकित्सा विज्ञान

जड़ी-बूटियों, फलों, वृक्षों की पत्तियों तथा विशेष प्रजाति के फूलों और रस का सेवन किया जाता था। हिरण के सींगों से चूर्ण बनता था। समुद्र के फेन (झाग) से भी औषधि बनती थी। शिलाजीत भी पाई जाती थी।

हड़प्पा सभ्यता में आर्थिक जीवन

- कृषि।
- पशुपालन।
- व्यापार।

- कुटीर उद्योग।
- माप-तौल के बाट।

कृषि

जौ, गेहूँ, मटर, खजूर, कपास, तरबूज, तिल, राई और सरसों उगाई जाती थीं। फावड़े के साक्ष्य नहीं मिले, लेकिन कालीबंगा से हल के अवशेष मिले हैं। फसल काटने के लिए पाषाण के हँसिए तथा अनाज ढोने के लिए दो पहियों वाली गाड़ी का प्रयोग होता था। बैल सिंधु सभ्यता का प्रमुख पशु था।

पशुपालन

बकरी, भेड़, सुअर, भैंस और बैल पाले जाते थे। साँड़ प्रमुख पशु था। हाथी भी पाले जाते थे, लेकिन घोड़े से परिचित नहीं थे। कुत्ते और बिल्लियाँ पाली जाती थीं। तोते, मोर, मुर्गे, चीते, खरगोश, बत्तख और हिरण के चित्र भी मिले हैं, पर उनके अवशेष नहीं मिले।

व्यापार

- हड़प्पा के लोग व्यापार को अधिक महत्व देते थे।
- नापने के लिए शीशे की पटरी का प्रयोग होता था।
- चन्हुदड़ो में उत्खनन से पत्थर के बाट बनाने का कारखाना मिला है।
- समाज में अनेक व्यवसायी वर्ग थे। इनके कार्य व्यापार या व्यवसाय से जुड़े थे। कुम्हार, बढ़ई और सुनार इनमें प्रमुख थे।
- आंतरिक व्यापार के अतिरिक्त ईरान, अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया और इराक से व्यापारिक संबंध थे।
- आंतरिक व्यापार वस्तु-विनिमय के माध्यम से होता था। बाहरी व्यापार में मुहरों का प्रयोग होता था। दूर देशों तक पहुँचने के लिए जहाजरानी की जाती थी।

कुटीर उद्योग

- कुम्हार के द्वारा चाक से निर्मित मिट्टी की मूर्तियाँ, खिलौने, बर्तन के अतिरिक्त ईंटों का निर्माण भी बड़े पैमाने पर किया जाता था।
- इस काल में हाथी-दाँत, सीप और धातु से विभिन्न आभूषण बनाए जाते थे।

माप-तौल के बाट

तौलने के लिए तराजू और बाट थे। चिकने चर्ट पत्थर से बाट बनते थे। सबसे बड़े बाट का वजन 375 ग्राम और सबसे छोटे का 0.87 ग्राम था।

हड़प्पा सभ्यता में धार्मिक जीवन

- मातृदेवी की उपासना।
- शिव या परम पुरुष की आराधना।
- वृक्ष और पशु पूजा।
- लिंग पूजा।

मातृदेवी की पूजा या उपासना

- हड़प्पा संस्कृति में मंदिरों का अभाव था। उत्खनन में ऐसा कोई भवन नहीं मिला, जिसे देवालय कहा जा सके। मिट्टी और धातु से बनी अनेक नग्न नारी मूर्तियाँ मिली हैं।
- ताबीजों, मिट्टी के बर्तनों और मुहरों पर मातृदेवी के चित्र अंकित हैं। इससे मातृदेवी की उपासना का संकेत मिलता है।
- **नोटः** प्रोफेसर आर. एस. त्रिपाठी के अनुसार, पूजा के क्षेत्र में मातृशक्ति की सर्वाधिक प्रतिष्ठा थी। प्राचीन काल में ईरान से एजियन सागर तक के देशों में उसकी आराधना होती थी।
- मातृदेवी का सृष्टि की उत्पत्ति और वनस्पति के विस्तार में योगदान स्वीकार किया जाता था।
- मातृदेवी को प्रसन्न करने के लिए बलि प्रथा का उल्लेख मिलता है। पूजा और आराधना में नृत्य, संगीत तथा बलि का प्रयोग होता था। इस काल के मंदिरों के अवशेष नहीं मिले हैं।

शिव या परम पुरुष की उपासना

अर्नेस्ट मैके को उत्खनन में एक मुद्रा मिली, जिस पर पुरुष के सिर के दोनों ओर सींग हैं। इस योगी के तीन मुख हैं और वह शांत, गंभीर मुद्रा में है। बाईं ओर जंगली भैंसा और गैंडा तथा दाईं ओर शेर और हाथी हैं। सामने हिरण है। ध्यानमग्न योगी के

सिर के ऊपर पाँच शब्द लिखे हैं, जिन्हें पढ़ा नहीं जा सका। इसे परम पुरुष के रूप में पशुपति शिव की आराधना से जोड़ा गया है।

वृक्ष और पशु पूजा

अनेक मुहरों पर पीपल के वृक्ष और उसकी पत्तियों के चित्र हैं। इनसे पीपल की पूजा का अनुमान लगाया जाता है। वर्तमान में भी पीपल की पूजा होती है। मुहरों पर साँड़ और बैल के चित्र भी हैं। आज भी शिव के साथ नंदी की पूजा की जाती है।

लिंग पूजा

उत्खनन में पत्थर के लिंग मिले हैं। इससे हड़प्पा संस्कृति में लिंग पूजा का अनुमान लगाया जाता है। कुछ के शीर्ष गोल और कुछ नोकदार हैं। इनका आकार एक-दो इंच से चार फीट तक है। स्वस्तिक, क्रॉस और प्लस को पवित्र चिह्न माना गया है। ये आज भी पवित्र माने जाते हैं।

हड़प्पा सभ्यता में राजनीतिक जीवन

1. राजनीतिक जीवन और व्यवस्था की जानकारी कम मिलती है। इतिहासकार हंटर के अनुसार, मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था लोकतंत्रात्मक थी, राजतंत्रात्मक नहीं।

2. इतिहासकार व्हीलर के अनुसार, मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था पुरोहितों और धर्मगुरुओं के हाथों में थी।

3. जनप्रतिनिधियों के माध्यम से शासन होता था। नगर और भवन निर्माण से वहाँ नगरपालिकाओं के होने का अनुमान लगता है।

हड़प्पा सभ्यता में कला का विकास

- मूर्तिकला।
- धातुकला।
- वस्त्र निर्माण कला।
- चित्रकला।
- पात्र निर्माण कला।
- नृत्य तथा संगीत कला।

- मुद्रा कला।
- ताम्र निर्माण कला।
- लेखन कला।

मूर्तिकला

उत्खनन में पत्थर और कांसे की मूर्तियाँ मिली हैं। इनमें शारीरिक अंगों का सुंदर चित्रण है। नर्तकी की मूर्ति आकर्षक है। मूर्तियों में गाल की हड्डियाँ उभरी हुई, आँखें तिरछी व पतली तथा गर्दन छोटी और पतली दिखाई गई है।

धातुकला

सोना, चाँदी, ताँबा, आदि के आभूषण मिले हैं।

वस्त्र निर्माण कला

उत्खनन में चरखा मिला है। इससे सूत कातने में लोगों की निपुणता का संकेत मिलता है। वे सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र पहनते थे।

चित्रकला

मुहरों पर साँड़, भैंसे और वृक्षों के चित्र मिलते हैं। इनसे चित्रकला में लोगों की निपुणता का पता चलता है।

पात्र निर्माण कला

पानी भरने के घड़े, अनाज रखने के अनेक छोटे भांड तथा मिट्टी के खिलौने मिले हैं। इनसे पात्र निर्माण में लोगों की निपुणता का पता चलता है।

नृत्य तथा संगीत कला

नृत्यांगना की मूर्ति मिली है। पात्रों पर झाँझ और ढोलक के चित्र मिलते हैं।

मुद्रा कला

पत्थर, धातु, हाथी-दाँत और मिट्टी की 600 मुहरें मिली हैं। इनके एक ओर पशुओं के चित्र और दूसरी ओर लेख हैं।

THEBOARDSTUDY.COM

ताम्र निर्माण कला

वर्गाकार और आयताकार ताम्रपत्र मिले हैं। इनमें पशुओं और मनुष्यों के चित्र हैं। बैल, भैंसा, गैंडा, साँड़, हाथी और शेर तथा मनुष्यों में योगी के चित्र मिलते हैं।

लेखन कला

उत्खनन में कोई लिखित शिलालेख या ताम्रपत्र नहीं मिला। लिपि के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। यह चित्रात्मक थी और दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ, दोनों ओर लिखी जाती थी।

निर्वाह के तरीके (कृषि, शिल्पकला, व्यापार)

- गुजरात से बाजरे के दाने मिले हैं। चावल के दाने कम मिले हैं।
- बनावली (हरियाणा) से मिट्टी के हल के खिलौने मिले हैं।
- कालीबंगा से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है। हल की रेखाएँ एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। इससे एक साथ दो फसलें उगाने का संकेत मिलता है।
- अधिकांश हड़प्पा स्थल अर्धशुष्क क्षेत्रों में थे। वहाँ कृषि के लिए सिंचाई की आवश्यकता पड़ती होगी।
- हड़प्पावासी कपास का भी प्रयोग करते थे। मोहनजोदड़ो से कपड़ो के टुकड़ों के अवशेष मिले हैं।

विलासिता की खोज

- फयांस घिसी हुई रेत या बालू, रंग और चिपचिपे पदार्थ के मिश्रण को पकाकर बनाया जाता था। इसके छोटे पात्र संभवतः कीमती थे, क्योंकि इन्हें बनाना कठिन था।
- सुगंधित पदार्थ रखने के लघुपात्र मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से मिले हैं।
- सोना दुर्लभ और संभवतः आज की तरह कीमती था। हड़प्पा स्थलों से मिले सभी स्वर्णाभूषण संचयों से प्राप्त हुए हैं।

मुहरों का आदान - प्रदान

- सिंधु सभ्यता की मुहरें उर, सुमेर, किश, उम्मा, तेल-अस्मार और बहरीन आदि से

मिली हैं।

- मेसोपोटामिया की मुहरें मोहनजोदड़ो और फारस की मुहरें लोथल से मिली हैं। ये वस्तुओं के आदान-प्रदान की पुष्टि करती हैं।
- जॉन मार्शल को मोहनजोदड़ो से एक ऐसी मुहर मिली है जिस पर एक व्यक्ति को बाघ से लड़ते हुए दिखाया गया है।
- जॉन मार्शल के अनुसार, यह विचार बेबिलोनिया के महाकाव्य गिलगमेश से लिया गया है।
- लोथल से गोदीबाड़े के अवशेष, मुहर पर जहाज का चित्र और मिट्टी से बने जहाज का नमूना मिला है।

मृद्भांड

- यहाँ के मृद्भांड मुख्यतः गाढ़ी लाल चिकनी मिट्टी के बने थे। उन पर काले रंग से, विशेष रूप से ज्यामितीय चित्रण किया जाता था।
- लोथल से एक मृद्भांड मिला है, जिसका चित्र पंचतंत्र की चतुर लोमड़ी की कहानी से जोड़ा गया है।
- हड़प्पा के एक मृद्भांड पर मानव और बच्चे का चित्र मिला है। अलग-अलग रंगों और डिजाइन वाले मृद्भांड भी मिले हैं, जिनका उपयोग सजावट में होता था।

कलात्मक अवशेष

- हड़प्पा से प्राप्त काले पत्थर से निर्मित नर्तक की मूर्ति नटराज नृत्य की मुद्रा में।
- हड़प्पा से सिरविहीन मानव की मूर्ति मिली है।
- मोहनजोदड़ो से सिरविहीन मानव मूर्ति मिली है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य नर्तकी।

हड़प्पाई लिपि की विशेषताएँ

- यह लिपि दाईं से बाएँ ओर लिखी जाती थी।
- यह लिपि चित्रात्मक लिपि थी।
- इस लिपि में 375 - 400 चिह्न थे।
- इस लिपि को आज तक कोई समझ नहीं पाया।

- यह एक रहस्यमयी लिपि है।
- लिपि के अब तक न पढ़े जा सकने के कारण हड़प्पा सभ्यता के बारे में उपलब्ध जानकारी सीमित है।

हड़प्पा सभ्यता में शिल्पकला

- **शिल्पकार्य का अर्थ होता है शिल्प से जुड़े कार्य करना जैसे :** -।
- मनके बनाना।
- शंख की कटाई करना।
- धातु से जुड़े काम करना।
- मुहरें बनाना।
- बाट बनाना।
- चन्हुदड़ो ऐसी जगह थी जहाँ के लोग लगभग पूरी तरह से शिल्प उत्पादन के कार्य करते थे।
- चन्हुदड़ो में मिली वस्तुओं से बड़े पैमाने पर शिल्प उत्पादन का संकेत मिलता है।
- हड़प्पाई मुहरें काफी मात्रा में पाई गई हैं।
- हड़प्पाई लोग काँसे का प्रयोग करते थे।
- काँसा ताँबा और टिन को मिलाकर बनाई गई एक मिश्रधातु है।

हड़प्पा सभ्यता में मनके कैसे बनाए जाते थे ?

- मनके सेलखड़ी नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- मनके कार्नेलियन नामक पत्थर से भी बनाये जाते थे।
- मनके जैस्पर नामक पत्थर से भी बनाये जाते थे।
- मनके ताँबे के भी बनाये जाते थे।
- मनके सोने के भी बनाये जाते थे।
- मनके कांसे के भी बनाए जाते थे। इन मनकों का प्रयोग मालाओं में होता था और ये सुंदर होते थे।
- मनके हड़प्पा सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता हैं।

THEBOARDSTUDY.COM

कनिंघम

- कनिंघम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पहले डायरेक्टर जनरल थे। अलेक्जेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का जनक भी कहा जाता है।
- कनिंघम ने 19वीं शताब्दी के मध्य में पुरातात्विक उत्खनन आरंभ किया। वे लिखित स्रोतों का प्रयोग अधिक पसंद करते थे।

कनिंघम का भ्रम

- कनिंघम ने सर्वेक्षण में मिले अभिलेखों का संग्रह, लेखन और अनुवाद भी किया।
- 19वीं शताब्दी में हड़प्पा की वस्तुएँ कभी-कभी मिलती थीं और कनिंघम तक पहुँचती भी थीं।
- एक अंग्रेज ने कनिंघम को हड़प्पा में पाई गयी एक मुहर दी।
- एक अंग्रेज अधिकारी ने अलेक्जेंडर कनिंघम को हड़प्पाई मुहर दिखाई। वे यह नहीं समझ पाए कि मुहर कितनी पुरानी थी।
- कनिंघम ने उस मुहर को उस कालखंड से जोड़कर बताया जिसके बारे में उन्हें जानकारी थी।
- वे उस मुहर के महत्व और उसकी प्राचीनता को समझ नहीं पाए।
- कनिंघम ने मुहर को गंगा घाटी में पनपे प्रारंभिक शहरों से संबंधित माना। वास्तव में वह उन शहरों से भी पहले की थी।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण

- जलवायु परिवर्तन।
- प्राकृतिक आपदा।
- भूकंप।
- अकाल।
- महामारी।
- बाहरी आक्रमण (आर्य जाति का आक्रमण)।
- वनों की कटाई।
- नदियों का सूखना।

THEBOARDSTUDY.COM

- नदियों का मार्ग बदल जाना।
- **बाढ़ों का आना। नोटः** दामोदर, कोसी और महानदी बाढ़ के लिए प्रसिद्ध नदियाँ हैं।
- **नोटः** पिगट और व्हीलर ने आर्य आक्रमण को पतन से जोड़ा। ऋग्वेद में आर्यों द्वारा हरियूपिया को नष्ट करने का उल्लेख है।
- वैदिक साहित्य में हड़प्पा को हरियूपिया कहा गया है।
- सर जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके और एस. आर. राव ने नदियों में आने वाली बाढ़ को पतन का कारण माना।
- अमलानंद घोष और डी. पी. अग्रवाल ने जलवायु परिवर्तन को कारण माना।

THEBOARDSTUDY.COM